

Hamari Atma Kya Chij Hai

Date	:	25th March 2000
Place	:	Delhi
Type	:	Public Program
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 10
English	-
Marathi	-

II Translation

English	11 - 17
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

आज तक हम लोग जानते ही नहीं थे कि हमें केवल सत्य मिला नहीं। जिस चीज को बुद्धि ठीक समझती थी उसी को हमने सत्य मान लिया। फिर बहकते-बहकते ये बुद्धि उस दिशा में चल पड़ी कि कोई सा भी काम करो वां ठीक है, अच्छा है। इससे लाभ है ये ही करना चाहिए। सत्य से परे मनुष्य भटक गया और भटकते-भटकते पता नहीं कौन सो खाई में जाकर गिरा। ये देख कर के लोग सोचते हैं कि ऐसे कैसे हुआ? ऐसी स्थिति क्यों आई? मनुष्य के अन्दर जो बुद्धि है उस बुद्धि को उस तरह से कुबुद्धि में परिवर्तित क्यों कर दिया? उसको सुबुद्धि बनाना था। वो कुबुद्धि ही गई। और उस कुबुद्धि से ऐसी ऐसी चीजें निकलने लगीं जिससे न तो दूसरों को कोई सुख हो सकता है न तो स्वयं को कोई सुख हो सकता है। हम लोग कभी-कभी घबरा जाते हैं सोच कर के कि ये क्या हो रहा है। मार्केट हो रही है और हर तरह का हिंसक कार्य हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चों तक को कोई नहीं छोड़ता। इस तरह की अनेक विकृतियाँ हमारे अंदर जो जागरूक हो गई हैं। उसको देख कर के यही मैं कह सकती हूँ कि घोर कलयुग है। कलयुग की परिसीमा है। इतना तो वर्णन शास्त्रों में भी नहीं है कि ये ऐसा काल आएगा। उन्होंने साधारण इधर उधर की बातें

कहीं। ऐसा मुझे लगता है कि लोग जो हैं वो पीतल में खाना नहीं खाएंगे और लोहे में खाना खाएंगे। इस प्रकार की बहुत ही औपचारिक बातें इसमें लिखी हैं। लेकिन जो दृश्य है, जो सामने दिखाई देता है वो बहुत भयानक है और बहुत विचलित करने वाला है। इसको पीछे यही कहना चाहिए कि मनुष्य को अपना रास्ता नहीं मिला और वह कहाँ से कहाँ भटक गया। उसको सुख नहीं मिला। इस सुख की खोज में वो गलत चीजों के पीछे भागा जिसे मृगतृष्णा कहते हैं। इस प्रकार मनुष्य भटकते भटकते घोर अधकार में डूब गया। वो ये भी नहीं जानता कि जाँ मैं कर रहा हूँ वो कुकर्म है और इस कुकर्म का फल मुझको तो बुरा मिलेगा ही और को भी मिलेगा। इस तरह की चीजें इतनी बढ़ गई हैं कि कभी-कभी समझ में नहीं आता कि ये संसार कहाँ जाने वाला है। अपने देश में अनेक प्रश्न हैं और देशों में भी बहुत से प्रश्न हैं। ये सोचना कि बाहर के लोग बहुत ठीक हैं ये गलत बात है। वो भी खोज में लगे हैं और उस खोज में वह देखना चाहते हैं कि किस तरह से वो उस स्थिति को प्राप्त करें जिससे वो मनुष्यता तो कम से कम पा लें। इसका जो भी परिणाम है वो ये है कि मनुष्य निराशा में चला गया, उसके अंदर गहन निराशा आ गयी। वो सोचता है अब क्या

करे? सब ऐसा ही चलना है, चलेगा। इसको कोई ठीक कर नहीं सकता।

ऐसे ही वक्त एक बात हमें याद रहना चाहिए कि साधु सन्तों ने कहा है कि अपने ही अंदर खोजो, अपने ही अंदर सब कुछ है। काहें रे वन खोजन जाई सदा निवासी सदा अनन्ता तोहे संग समाई। वो कौन है। वो कौन सी चीज है जिसके बारे में सब सन्तों ने हिन्दुस्तान में भी कहा है बाहर भी कहा है? सब धर्मों में भी है। इतना विप्रवास धर्मों का भी हो गया कि लोग इस बात को भूल ही गये कि जो हमारे अंदर है उसे खोजना है। और हमारे अंदर हमारी आत्मा है। हर इंसान में ये आत्मा पूरी तरह से जीवित अवस्था में है। वो आत्मा जो है वही परमात्मा का प्रतिबिम्ब हमारे हृदय में है। ऐसी तो बातें सभी कहते हैं। सबने बताया की ऐसी आत्मा है। लेकिन लोग कहते हैं माँ हमने तो कभी जाना नहीं की ऐसी कोई चीज है। अब आपका समय आ गया है इसे जानने का कि हमारी आत्मा, अन्तर-आत्मा क्या चीज है और इस आत्मा को हम किस प्रकार पा सकते हैं। ये आत्मा माने जैसे अच्छी सी अंदर सब चीज देख रही है और अपने प्रकाश से भी अपने ही अंदर समेटे हुए है। वो ये भी नहीं करती कि कहीं हम गलत काम कर रहे हैं तो इस गलत काम पर कोई प्रकाश डाले। क्योंकि हम तो अपनी सुबुद्धि को कुबुद्धि बना चुके और हम देख ही नहीं सकते कि हम कोई गलत काम कर रहे हैं! हर तरह का गलत कर्म हम करते हैं और कहते हैं हम तो बहुत अच्छे आदमी हैं। इस प्रकार हमारी

सत्सत् विवेक बुद्धि भी खत्म हो जाती है।

अब इसी आत्मा को पाने की बात है और इस आत्मा को किस प्रकार पाया जा सकता है ये समझना चाहिए। इसी के लिए आपके शरीर के अंदर ही इसकी व्यवस्था है। कोई बाहर जाने की जरूरत नहीं। आपके ही त्रिकोणाकार अस्थि में एक शक्ति कुण्डलिनी, एक पवित्र शक्ति स्थित है। जब इसको जागृति होती है तो वो छः चक्रों में से गुजरती हुई अंत में ब्रह्मरन्ध्र को भेदते हुए उस सूक्ष्म शक्ति से एकाकारिता करती है जो परमेश्वर की प्रेम शक्ति है। ऐसे अपने शास्त्रों में लिखा था। लेकिन ऐसे तो कोई करता नहीं। अपने देश के बहुत से साधु संत बाहर गये। मेरे ख्याल से मछिंदरनाथ, गोरखनाथ गये होंगे क्योंकि बोलिविया में भी ये लोग सब जानते हैं। ये चक्रों के नाम जानते हैं और वो कुण्डलिनी के जागरण की बात जानते हैं। रूस में भी मैंने देखा है और हर जगह देखती हूँ की पुरातन जो पेंटिंग्स हैं वो कितनी वहाँ चित्रकारी है। उसमें सब चक्र बने हैं। आप अगर थोड़ा सफर करें तो आप हैरान होंगे कि ये सब चीजें इन्होंने कहाँ जानी और कैसे जानी? ये किसने बताया? इसके लिए अपने यहाँ के कोई न कोई संत साधु गये थे, ऐसा बताते हैं और उन्होंने ये बातें बताई। मगर हम लोगों को भी बता सब चले गये और हमारे यहाँ भी लिख कर चले गये कि ऐसी कुण्डलिनी आपके अंदर है। यहाँ तक के जो नाथ पंथी लोग थे उन्होंने इसके बारे में किसी को बताया नहीं क्योंकि वो सोचते थे किसी और को दे दीजिए तो लोग इसका क्या इस्तेमाल

करेंगे? क्या करेंगे क्या नहीं करेंगे? और हुआ है। जिन्होंने ऐसी चीज पढ़ी वो दुनिया भर की झूठी-मूठो बातें फैलाते हैं और खूब उन्होंने पैसा कमाने धंधा बनाया। तो उनका यही विचार रहा होगा कि ये सर्वसाधारण इन्सान के लिए नहीं देना। लेकिन किताबों में लिखा है। अब बारहवीं शताब्दि में ज्ञानेश्वर जो आए उन्होंने अपने गुरु से कहा कि आप मुझे इजाजत दें मैं अपनी ज्ञानेश्वरी में इसके बारे में लिखना चाहता हूँ। छठे अध्याय में उन्होंने लिखा। लेकिन ऐसा भी होता है कि धर्म के नाम पर बहुत लोग पैसा कमाते हैं। तो उन्होंने कहा 'नहीं, ये निषिद्ध है, इसको मत पढ़ो। ये बेकार चीज है। ये सबके बस का नहीं। अभी मैंने एक बड़े भारी साधु बाबा का लेक्चर सुना। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कैसे ये कहा आसानी से? आप नहीं समझ पाएंगे। पर इस तरह से गाली दी कि आप लोग सब प्रवृत्ति मार्गी हैं। निवृत्ति मार्गी नहीं हैं। प्रवृत्ति माने डधर डधर दौड़ने की आपको जो क्रिया है वो आप है। अब बताइए! और सब हौ-हौ कर रहे। पर आप निवृत्ति मार्गी नहीं हैं तो आप को ज्ञानमार्गी होना चाहिए क्योंकि सहज योग ज्ञान-मार्गी हैं। आप अपने तरीके से चलिए और गुरुओं की सेवा करिये। उनको प्रसाद दीजिए इनको ये करिये वो करिये। और लोग मान गये। कोई किसी को कहे कि तुम निवृत्ति नहीं हो तो एक तरह से तो ये गाली हो गई। लेकिन किसी को संस्कृत ही मालूम नहीं। जो बोल रहे हैं ठीक ही बोल रहे हैं। कुछ तो हमें इन्होंने बनाया है और प्रवृत्ति पाने का मतलब है

आप गलत-गलत चीज की तरफ दौड़ना और इसलिए इन्होंने साफ-साफ कह दिया कि आप सब गुरुओं की सेवा करिए। एक बोरा घर के आप बहुत से मूर्तियाँ ले आइए, उनकी पूजा करिए। अब बैठें हैं सबेरे चार बजे से, कर रहे हैं। फिर ये उपवास करिए ये तपास करिए, इतने कर्मकाण्ड हमारे अन्दर भर दिए कि हम उसी में मिते जा रहे हैं। ये भी नहीं हमारे समझ में आता ये क्यों कर रहे हैं? इसका क्या फायदा हुआ हमारे बाप दादाओं ने यही किया और हम भी यही कर रहे हैं? मोहम्मद साहब ने साफ कहा कि मूर्ति पूजा बन्द क्योंकि पता नहीं किसने बनाई है। ये चीजें किन लोगों ने बनाई हैं। लेकिन ये ठीक है कि इन्होंने जो मक्का में एक काले पत्थर के चारों तरफ प्रदक्षिणा डालने की बात कही है वो क्यों है? इस पत्थर में क्या विशेषता थी? इस पत्थर में क्या बात थी जो कह रहे थे कि मूर्ति पूजा मत करो पर इस पत्थर के चारों तरफ क्यों घुमाते हैं? इसका वजह ये थी कि मक्का में मक्केश्वर शिव हैं; वो शिव हैं, मक्केश्वर शिव हैं। लेकिन अब कैसे जानिएगा कि वो मक्केश्वर शिव हैं? आप कैसे जानिएगा कि स्वयंभू मूर्ति कौन सी है? आपके पास कोई साधन नहीं। इसीलिए जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो ये छः चक्रों को छेद कर चारों तरफ फैली हुई देवी शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करती है तब आपके हाथ में चैतन्य बहता है। तब आपके हाथ बताएंगे कि क्या सत्य है और क्या गलत। इतनी सुन्दर व्यवस्था हमारे अन्दर पहले ही से बनी है। ये कुछ बनाने की जरूरत नहीं।

अब आपके हाथ बता रहे हैं, माने आपके हाथ जानते हैं। मोहम्मद साहब ने कहा है कि जब कियामा आएगा तो आपके हाथ बोलेंगे। आ गया क्रियामा। अब इसे प्राप्त करो। कोई पढ़ता भी है, जब हाथ बोलेंगे तो इस हाथ से पता चलेगा क्या चीज गलत है, क्या चीज अच्छी है क्या चीज सही? अब कोई कहें कि मक्का में क्या रखा है हाथ उधर करके देख लीजिए। जो लोग सहजयोगी हैं सब देख सकते हैं कि कितनी चैतन्य की लहरें हैं तो कौन सत्य है और कौन असत्य। ये आप अपने हाथ पर जान सकते हैं। इतनी सुन्दर व्यवस्था कि पूरा यन्त्र ही हमारे अन्दर बना हुआ है। इतना सुन्दर। जब ये व्यवस्था होती है और जब आप उसे प्राप्त कर लेंगे तो कमाल की बात है कि आपके अन्दर के दोष अपने ही आप विलय हो जाते क्योंकि आप दूसरी ही दुनिया में गुजर जाते हैं। आपके अन्दर काम, क्रोध, मोह, मद-मत्सर, लोभ ये जो आपके शत्रु हैं, भाग जाते हैं। हमारे लिए तो आश्चर्य की बात है कि इंग्लैंड में जब हमने पहले दिन प्रोग्राम किया था तो वहाँ छः ड्रग एडिक्ट (नशेड़ी) आए। वो लोग ड्रग लेते थे और दूसरे दिन ही वो साफ हो गए। भई ये तो कमाल है ये कैसे हो गया? कहने लगे अब तो हमें पता नहीं हमें तो लेना ही नहीं, हमें अच्छा ही नहीं लगता। ये बेकार है। बड़े बढ़िया लोग हो गए। वही आज बहुत कार्यान्वित हैं और कार्य कर रहे हैं। तो ये जो चीज है कि अपने को प्राप्त करो कहा है, माने अपनी आत्मा को जानो, इसकी व्यवस्था भी हमारे ही अन्दर बनाई हुई है जैसे कोई बड़ी

देवी हमारे अन्दर विद्या है। या कहना चाहिए कि ये मशीन है हमारे अन्दर। जब ये चलकर, जब ये शुरू हो जाती है तब एक से एक चमत्कार आपको अपने ही बारे में दिखाई देते हैं। जितने शराबी शराब पीते थे उन्होंने शराब छोड़ दी, कितने ही दुष्ट लोग थे उन्होंने दुष्टता छोड़ दी। मैं तलियाती में गई तो वहाँ पर एक माफिया के मुख्य डॉन थे तो उन्होंने सहजयोग ले लिया। मैंने कहा भई कमाल है इन्होंने सहजयोग कैसे ले लिया? कहने लगे माँ वो सहजयोगी हो गए आपको मिलना चाहते हैं। वो आए तो इतने नम्र। बस उन्होंने इतना कहा कि माँ मैंने बहुत गुनाह किए हैं इनको मुझे माफ़ी मिल जाएगी या नहीं ये बता दो? अरे! मैंने कहा क्या बात करते हो, तुमने गुनाह किए वो तो हो गए। अब भूतकाल में हो गए पीछे हो गए। आज मैं तुमसे जो बात कर रही हूँ वर्तमान की। और वो बात अब खत्म हुई, अब वर्तमान में तुम क्या हो? तुम आज कहाँ से कहाँ हो गए हो, ये देखना है। फिर उसने इतनी मदद की, हम लोगों की इतनी सराहना की और एक तरह से बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये जिस तरह जो माफिया का जो सबसे वहाँ मुख्य आदमी था उसमें ये बदलाव कैसे आ गया? वो कैसे इस चीज को मान गए? ये घटित हो गया, उसमें किसी को लैक्चर नहीं दिया, किसी को समझाया नहीं, बताया नहीं। ये घटना है और ये घटना इस कलियुग में होनी अत्यावश्यक है क्योंकि इससे आदमी जो है परिवर्तित हो जाता है Transform हो जाता है। और जब आदमी परिवर्तित हो जाता है तब वो इतना निखर आता

है इतना सुन्दर हो जाता है। आज दुनिया को इस परिवर्तन की जरूरत है। यही परिवर्तन करना ही हम सोचते हैं, आप सब सहजयोगियों का काम है। मैंने जहाँ तक हुआ है, को है मेहनत। इतने देशों में घूमो फिरौ हूँ। अब आप लोगों को चाहिए जो सहजयोग में आए है या आने वाले है उनको चाहिए कि और लोगों को बताएं और उनको इस परिवर्तन में लाना है बहुत से लोग भटक चुके हैं या तो परमात्मा के नाम पर भटक चुके हैं, धर्म के नाम पर भटक चुके हैं किसी भी चीज में भटक चुके हैं। इनको जब आप इस अवस्था में लाएं तब आप देखिए इनका दीप कैसे जलता है। अब इतनी सारी यहाँ बत्तियाँ जल रही हैं। इनका अगर कनेक्शन इनके साथ न हो, मेन के साथ, तो क्या जल सकती है? इसी प्रकार जब तक हमारा ही सम्बन्ध जैसे कि ये है इसका सम्बन्ध गर मेन के साथ नहीं है तो इसका कोई उपयोग ही नहीं। इसी प्रकार हमारी हालत है कि हमारा सम्बन्ध इस महान शक्ति के साथ है और सबसे बड़ी बात ये है कि ये सत्य ही थी, सत्य ही है।

जब आपका चित्त इस आत्मा के प्रकाश से आलोकित होता है तो आप एक अलग ही प्रकाशमान व्यक्ति हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कि जो सारे संसार को भलाई करता है। सारे संसार में गर मनुष्य बदल गया तो कौन सी आफत आएगी। सारी आफत तो मनुष्य से ही है। जब मानव ही बदल जाएगा तो कोई सी भी परेशानी, कोई सी भी तकलीफ नहीं आएगी। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि किसी तरह से जितना हो

सकें और लोगों को भी जागृति करें और इस जागरण में इसे पाए। इसको प्राप्त करने के बाद देखिए, मैंने तो यही देखा है, न कहीं झगड़ा होता है, न कोई आफत होती है। कोई भी देश के लोग आए, कहीं से भी आए, न कोई मोर्चा बाँधता है न कोई झण्डे उठाता है, कुछ नहीं। बस एक दूसरे का समागम है। सबसे बड़ा आनन्द का सागर है और एक दूसरे से मिलकर ही बड़ा अच्छा लगता है। अपने देश की तो संस्कृति है कि भाईचारा होना चाहिए। सबको आपस में मिलावा होना चाहिए। हर एक चीज में एक तरह से दूसरे की मदद करनी चाहिए। ये तो अपनी संस्कृति है।

विचित्र-विचित्र बातें होती गईं। ये देश अनेक हिस्सों में विभाजित हो गया और इसलिए इसमें भी बहुत से झगड़े हो रहे हैं। जहाँ देखा वहाँ झगड़े। कहीं जाइए तो एक मोर्चा लिए ये खड़े हैं तो उधर दूसरा मोर्चा लिए खड़े हैं और कोई भी बात को लेकर के इस तरह से कोई भी चीज को लेकर के एक गठबन्धन करने का और झगड़ा करने का। ये इन्सानियत की निशानी नहीं, ये तो जानवर भी नहीं करते फिर इन्सानों को तो ऐसा नहीं करना चाहिए। इन्सान जो है ये सबसे ऊँची चीज परमात्मा ने बनाई है और इसमें इतना सुन्दर अपने अन्दर जो पूर्णतः ये एक इन्तजाम कर दिया, ऐसी व्यवस्था कर दी है कि आप बहुत आसानों से इसे प्राप्त कर लें और इसके लिए आपको पैसा-वैसा देने से कोई मतलब ही नहीं है। जैसे एक साहब मुझसे कहने लगे कि मैं आपको एक लाख रुपया देता हूँ

आप मेरी कुण्डलिनी जगाइए। मैंने कहा जनाब मैं आपको दो लाख रुपया देती हूँ आप बातचीत बन्द करिए। क्योंकि कुण्डलिनी को पैसा नहीं समझ में आता। कुण्डलिनी जो है एक दैवी शक्ति आपके अन्दर है आपको शुद्ध इच्छा होने पर, गर आपको शुद्ध इच्छा नहीं हुई तो जबरदस्ती नहीं हो सकती। ये ऐसा क्या चलंगा आप जबरदस्ती नहीं कर सकते। गर आपके अन्दर शुद्ध इच्छा है तभी ये कार्यान्वित होगी। अब हमारी कोई सौ भी इच्छा शुद्ध नहीं है गर शुद्ध होता तो आपका आजकल जो Economics है ये नहीं चलता। Economics में क्या है कि आज आपने समझ लीजिए मार धाड़ करके घर बनाया पर इसका कोई सन्तोष नहीं। फिर आपको मोटर चाहिए, इसका भी सन्तोष नहीं। किसी चीज से सन्तोष ही जब नहीं मिलता इसका मतलब आपकी इच्छा शुद्ध नहीं। गर शुद्ध इच्छा होती तो आपको सन्तोष मिलता लेकिन एक ही चीज में शुद्ध इच्छा है, वो ये है कि अपनी आत्मा का आत्मसाक्षात्कार। आत्मा आपके चित्त में है। इसका प्रकाश आपको आनन्द देगा, शान्ति देगा। सब तरह से ज्ञान देगा लेकिन सबसे ज्यादा ये आपको सामूहिक बनाएगा। इसमें आप सामूहिक हो जाएंगे। सामूहिकता की बात ये है कि दुनिया में हम लोग ये सोचते हैं हम लोग अलग हैं। ये फलाने हैं दिकाने हैं। ऐसा तो परमात्मा की नजर में नहीं है। परमात्मा की नजर में सब हम लोग उन्हीं के आश्रय में हैं। ये दिमागी जमाखर्च है कि हम ऊँचे हैं, ये नीचे हैं, ये फलाना है दिकाना है। सब बिल्कुल ही दिमागी जमा खर्च है। आज

देखिए हमसे मिलने एक आए थे, साहब वो आइवोरी कोस्ट के मुखिया थे, वो इतने नम्र आदमी इतने नम्र आदमी कि मैं तो हैरान हो गई। आकर नम्रतापूर्वक मुझसे कहते हैं कि माँ ऐसा कारण कि हमारे देश में सब लोगों का सहजयोगी बना दीजिए। मैंने कहा अच्छा ठीक है तुम्हीं बना सकते हो सबको। कहने लगे मैं तो इतना मक्के में आ गया हूँ। उन्होंने तीन बोंबियांसे तलाक लिए। अब कहने लगे मैं तो शर्मिन्दा हूँ, मेरी क्या जिन्दगी है? मैंने क्यों ऐसी जिन्दगी बनाई? मेरे समझ में नहीं आया पर अब जो है मैं बिल्कुल बदल गया हूँ। अब मेरे अन्दर इतना आनन्द, इतनी शान्ति और इतना सुख है। और छः सौ लोग, छः सौ लोग वहाँ पर जो हैं सहजयोगी हैं और उन्होंने मुसलमान धर्म लिया था। मैंने कहा तुम मुसलमान क्यों हो गए? तो उन्होंने कहा कि इसलिए क्योंकि ये जो फ्रैन्च लोग हैं इनमें तो कोई नैतिकता है ही नहीं, Morality है ही नहीं। इनको तो नैतिकता एक दम बिल्कुल गई बीती है। तो हमने कहा मुसलमानों का धर्म ले लो उससे थोड़ी तो नैतिकता बनी रहेगी। इसलिए हम बन गए। तो मैंने कहा सहजयोग में तो सभी धर्म एक समान हैं। इसमें किसी धर्म का अपमान नहीं, कोई ऊँचा नहीं नीचा नहीं। बल्कि आप अपने धर्म को बहुत अच्छे से समझ लेंगे। इसकी जो गहराई है उसको समझते हैं। अभी तक आप भटक रहे हैं तो आप उसे पा सकते हैं। ये असलियत है जिसके लिए ये धर्म बनाए गए थे। जो लोग आजकल धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़ा, ये वो करते हैं ये कैसे हो सकता

है? ये गलत चीज़ है और ये गलत काम इसलिए हो रहा है कि फिर से मैं कहूँगी कि अन्दर एक कुबुद्धि आ गई और कुबुद्धि ये कार्य करती है।

अब इस कुबुद्धि को भी प्रकाशित करती है आपको कुण्डलिनी। जब ये इस चक्र से गुजरती है, आज्ञा जिसे कहते हैं, तो वो प्रकाशित कर देती है और आपको समझ में आ जाता है कि ये मैं ये क्या कर रहा था? ये किस बंधकूपों में दौड़ रहा था? ये किस बात को लेकर मैं लड़ रहा था। जब तक आप अपने को नहीं जानिएगा तब तक आप सत्य को पहचान ही नहीं सकते और अब इसी चीज़ में अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हैं। अपनी करेंगे, अपने बच्चों की करेंगे, इतना ही नहीं पर सारे देश का ही सत्यानाश हो जाएगा। अनेक देशों का इस तरह से सत्यानाश हो रहा है। इसलिए एक जो ये चीज़ हमारे देश में है और जो बहुत ही पवित्र चीज़ है कि आपको कुण्डलिनी का जागरण करना है। अब ये कुण्डलिनी आपको माँ है आपको अपनी व्यक्तिगत, आपको अपनी ही माँ है। वो किसी और को माँ नहीं। जैसे आपको माँ के हो सकता है पाँच-छः बच्चे हों आठ दस बच्चे हों, इस कुण्डलिनी के आप ही बेटे हैं आप ही बेटा हैं। अब इस कुण्डलिनी का जब जागरण होता है और जब ये जागृत होती है तो इसका सबकुछ मालूम है आपके बारे में। इसके अन्दर आपके बारे में सारा रिकार्ड है कि आप क्या चाहते हैं, आप क्या थे, आपमें क्या-क्या दोष है, आपके शरीर में क्या दोष है? कहाँ कौन सी तकलीफ

है? सब मालूम है उसको सम्भालते हुए ये आपको माँ उठती है और आपको इतनी भी तकलीफ नहीं होती। आश्चर्य है। इतनी माँ भी तकलीफ नहीं होती क्योंकि ये माँ है। जब आप पैदा हुए थे तो माँ ने सारा दुख अपने ऊपर झेला था। आपको कोई तकलीफ नहीं दी थी। उसी प्रकार ये माँ है। जब इसका जागरण होता है तो किसी प्रकार की आपको तकलीफ नहीं होती कोई परेशानी नहीं होती और आप एकदम कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। और फिर ये आश्चर्य होता है कि आप ऐसे थे, ये सब आपके अन्दर था इतनी सम्पदा थी ये पता ही नहीं। वो हर तरह से आपके साथ हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक चारों स्तर पर ये चक्र कार्य करते हैं और सब तरह से ये मामला बन जाता है। इसमें कोई शक नहीं, सहजयोग में आने के बाद तन्दरुस्ती अच्छी हो जाती है, सब कुछ अच्छा हो जाता है। इतना ही नहीं, लेकिन जो कुछ साम्प्रत्य स्थिति वाँ भी लक्ष्मी की कृपा से ठीक हो जाती है।

अपने देश में इतने लोग सहजयोगी बने हैं अधिकतर उनकी सबकी सम्पत्ति ठीक हो गई, उनका व्यवहार ठीक हो गया, उनके झगड़े खत्म हो गए। सब कुछ क्योंकि ये शक्ति चारों तरफ विद्यमान है। हर जगह विचरण करती है और बड़ी कार्यान्वित है और इस शक्ति के सहारे हमारा भला ही नहीं बल्कि एक विशेष रूप का आदर्श जीवन बन जाता है। ऐसा जीवन जिससे देखकर कहें ये क्या आदमी है इस तरह का। जैसा पहले कहते थे, साधु सन्तों के लिए। आज

तो सहजयोग में इतने लोग बैठे हैं और इतने सहज में आए हैं। ये इतने देशों में सहजयोग फैलने का कारण ये हैं कि सब देशों में एक प्रकार की बड़ी ग्लानि एक तरह की निराशा और दूसरे बहुत ज्यादा हिंसक वृत्तियाँ बढ़ गई हैं। सो उसमें जो लोग थे उन्होंने सोचा ये गलत है तो वो सहज में आए। ऐसे बताते हैं 86 देशों में सहजयोग फैला है। हालांकि मैं इतने देशों में तो गई नहीं, सही बात है। पर जैसे बीज उड़कर जाए, जहाँ भी वहाँ पौधा खड़ा हो सकता है। उसी प्रकार सहजयोग फैला और बड़ा आश्चर्य होता है कि वहाँ से लोग यहाँ आ जाएंगे और वहाँ भी आते हैं और इटली भी आ जाते हैं। पर मैं उनके देश में अभी तक नहीं जा पाई और हाँ सके तो कभी चली भी जाऊँगी। लेकिन उनका जो प्यार है उनका आपसी प्यार और जो उनका आपसी मेलजोल है वो देखकर के बड़ी हैरान हूँ। किसी एक आदमी के लिए भी अभी बम्बई में जब बम फूटा था तो एक लड़का था हमेशा कहता था मैं मर जाना नहीं चाहता। मेरी माँ बहुत खराब है। ये है वो है बार-बार यही कहता था। उसी एक लड़के की मौत हुई। तो सारे देशों में इतने देशों में ये खबर हो गई और सब लोग दौड़ पड़े और पता लगाया कहाँ है क्या है ये, वो? फिर वहाँ जाकर कहा कि साधू सन्त हैं, ये तो उन्होंने कहा अच्छा तो हम तुमको ज़मीन देते हैं तुम चाहो तो इसे यहाँ जलाओ इसी में गाड़ो। ऐसे ऐसे लोगों ने वहाँ चिट्ठियाँ भेजी कि मैं तो हैरान हो गई। इसके बाद में अभी मैंने देखा कि हमारे भाई साहब की Death हो गई, बाबा मामा।

उन्होंने बहुत लोगों को प्यार दिया, इतने लोगों के फेक्सस आए कि मैं अभी उनमें से गुजर ही नहीं पाई। इतना प्यार, इतनी-इतनी बढ़िया-बढ़िया बातें! जिसके बारे में लोगों ने लिखा मैं सोच कर हैरान हूँ! मैं नहीं सोचती थी कि ये इनका इतना प्यार लोगों में बँटा हुआ है! इतने लोग उनको प्यार करते हैं! तो ये सारा प्यार का माहौल जिसमें आप आए सब आपको प्यार करेंगे। आप भी सबको प्यार करेंगे। यही सबसे बड़ी बात है सहजयोग की कि सहजयोग की शक्ति जो है प्रेम की शक्ति है और इसके आगे कोई और शक्ति नहीं चल सकती। प्रेम से बड़ी शक्ति जो प्रेम की शक्ति है इसी के एक बड़े भारी आवरण में आप हैं और हमेशा आपका संरक्षण है आपको कोई छू नहीं सकता क्योंकि आपको परमात्मा प्रेम करते हैं। इनके आगे कौन चल सकता है, इनके आगे कौन दुष्टता कर सकता है? ऐसे ऐसे हमारे यहाँ उदाहरण हो गए कि लोग कहते हैं माँ कैसे मैं बदल गया मुझे पता नहीं। कैसे मैं पा गया मुझे पता नहीं। ये सारी बातें सुनकर आप लोग भी बहुत खुश होते हैं क्योंकि सब आपके ही भाई बन्धु हैं। सब आपके ही लोग हैं और इसे देखकर के यूँ लगता है कि दुनिया बदलने वाली है और दुनिया में बड़े अच्छे दिन आएंगे, बहुत अच्छे दिन आएंगे और उसमें लोग हमेशा हमेशा एक महान देश, एक महान व्यक्तित्व, एक महान कार्य को लें। ये होना है, ये हो रहा है, पर अभी भी बहुत लोगों को परिवर्तित करना है। परिवर्तन बहुत जरूरी है और अभी तक इन्सान

बनें रहें लेकिन इन्सानियत से भी उतर गए। इनका परिवर्तन बहुत आसान है। इसे आप प्राप्त करें। परिवर्तन के सिवाय कोई और मार्ग नहीं है और इसमें ये कुण्डलिनी के जागरण से होता है और किसी से होता नहीं। अब कोई कहेगा कि मैं ये इसको अगर हम पानी में डाल दें तो चलेगा या इसको हम जलाए तो चलेगा? नहीं चलेगा इसका सिर्फ कनेक्शन आपको लगाना है। लेकिन थोड़ा समय आपको देना होगा। और जहाँ भी आपके सेंटर हैं वहाँ जाए और अपनी गहनता बढ़ाएं। और ये बहुत लोग कम करते हैं इसलिए इनकी उन्नति होती नहीं। जब तक आप इसे सामूहिकता का प्यार नहीं

देंगे, जैसे कि पेड़ पौधों को आपको जल देना होता है, उसी प्रकार ये शर आप नहीं करेंगे तो ये वृक्ष बढ़ेगा नहीं। इसलिए ईसा ने कहा है कि कुछ बीज ऐसे पत्थर पर गिरे, कुछ बीज ऐसी जमीन में गए कि वहाँ खत्म हो गए और कुछ बीज ऐसे थे जो क्रायदे की जमीन पर रहे और पनप करके वृक्ष बनें। तो इसमें कोई धर्म को निन्दा नहीं है। किसी धर्म के विरोध में नहीं, पर सारे धर्मों का गौरव इसकी विशिष्टता है और एक सम्बन्ध जबरदस्त इन सब धर्मों में है वो स्थापित होगा एक बहुत ही ज्यादा आनन्दमय, सुखमय ऐसा जीवन भविष्य में आपके लिए बना है इसे आप प्राप्त करें।

ऐसा मेरा आपको अनन्त आशीर्वाद है।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

So far we did not know that we have not yet achieved absolute truth. Commands of intellect, we accepted as Truth. Gradually the brain led us to a state where we started justifying all our deeds. We started running after the material gains. Human connections with truth were severed and human beings fell into the unknown abyss. Now people are surprised as to how has it happened? Why such a situation arose? Why did man shift from wisdom to wickedness? Wickedness took the place of wisdom. This wickedness benefited neither the individual nor any one else. Some times we are alarmed to see the developments around. Every where there is blood shed and violence. Even the small children are not spared. Many such perversions awakened in us. About them, I can only say that there is extreme kaliyuga. There should be some limit of this kaliyuga. Even the scriptures have not described that this age is going to be so terrible. Scriptures made just a mention of it. It's written that in this age people will have their meals in the utensils of iron instead of brass. Many such formal things have been referred to. But the scene before us is horrible and moving. We could only say that human beings failed to have the right path and so went astray. In search of comforts, man ran after the luxuries.



but comforts remained a mirage and thus he sank in deep darkness. Man doesn't know that his deeds are evil and that he has to suffer as a result. Such things have developed so much that one doesn't understand what is going to be the fate of this world.

There are many problems in our country and other countries as well. It is improper to think that the people of other countries are right. They are also searching, and endeavouring to achieve the state of humanity. But man was awfully disappointed and fell in to the ditch of disappointment. He finds no way out. Thinks that every thing will go on like that. No one has solution for these maladies.

In such a state we should remember that saints and seers have asked to "Search within". Solutions to all the problems are within us. Kabir Sahib said, "Kahe Re Ban Khojan Jai, Sada Niwasi, Sada Ananta, Tohe Sang Smal". What

are you searching in the forest? The eternal one resides within you, He is always with you. Who is this eternal one about which the saints of the world talked? All the Dharmas told about it, Religion was misinterpreted in such a way that it created confusion and people forgot the reality that they have to search within. Our soul resides within us. It is fully alive in every being. This Atma is the reflection of the Almighty God (परमात्मा) in our heart. All the saints talked about it. But people say that, 'Mother we have not known any such thing'. Now the time has come for you to know about your soul and how to experience it. The 'Atma' within us is witnessing everything. We have neglected it to such an extent that now it does not warn us against our misdeeds. We have changed our wisdom into wickedness and are unable to see our misdeeds. We go on committing all sorts of wrong things and justify ourselves. That is how the sense of discretion (सत् सत् विवेक बुद्धि) becomes inoperative.

Now we have to know as to how to achieve the spirit. For this, arrangement has been made in our body. We need not search it outside. Kundalini, the sacred power is placed in your triangular bone called Sacrum. When it is awakened, it pierces six plexuses and gets united to All Pervading Power of Divine Love. It is described in our scriptures. Many saints from our country

went to other countries. I think Machhindra Nath and Gorakh Nath also went to many countries. Bolivian people know about them. They know the names of the chakras and also they know about kundalini. I have seen, in the ancient paintings of the Russia, they have painted plexuses. If you travel a little in this country then you will be surprised that how and from where have they known about it! Decidedly some of our saints might have gone there and told about every thing. In India also they told and wrote about Kundalini, that it resides within you. Nath Panthis avoided to tell about it because they were afraid of this power being misused by the people. Many, so called saints who read about it have spread misconceptions about it and made it a source of making money. Our ancient saints might have thought that the awakening is not meant for ordinary people. In twelfth century, saint Gyaneshwara sought permission from his Guru to write about Kundalini in his book - Gyaneshwari. In the sixth chapter of Gyaneshwari he wrote about kundalini. Since the pandits were making money in the name of God and were not wise enough to understand it, they said to the people that the sixth chapter of Gyaneshwari is prohibited. Do not read it, it is useless, it is not meant for ordinary people. Recently I have heard a lecture of a renowned Babaji. He said, that you won't be able to understand about it, you are all worldly people not renunciants.

You always keep running after material desires, and everybody accepted what he said. Sahaja Yoga is the path of the knowledge (Gyan Marga). So you have to take to the path of knowledge and become Gyan Margis. But these so called saints misguided the people and asked them to serve their Guru and do all sorts of rituals and people accepted them as true. **To say someone that you are not detached (निवृत्त) is a disrespect to him. But the people who do not know Sanskrit Language think them (Babaji) to be right.** Attachment (प्रवृत्ति) means running after material desires. So these saints told every one to serve their Gurus, worship the idols morning till night. Do all sorts of fastings and penance (तपास). They prescribed so many rituals to the seekers that they are inextricably caught in them.

Without trying to understand the benefits of these rituals, they keep on repeating them for generations. Mohammad Sahib told very clearly that idol worship is prohibited. But Mohammad go round the black stone placed in Mecca. Why Mohammad Sahib asked them to go round this stone? On the one side he forbade idol worship and on the other asked Mohammadans to circumambulate (प्रदक्षिणा) the sacred stone. The reason for this is the stone in Mecca is Meccashwar Shiva. But how would you know the truth about it? How would you know about the swayambhu (स्वयंभू) idols. You do not know. How to

differentiate? When the kundalini is awakened, it pierces six plexuses and gets connected to the All Pervading Power of Divine Love, then Divine cool vibrations start flowing from your hands. Then your hands tell what is truth and what is untruth? Such a beautiful arrangement has already been made in us. There is no need to make any arrangement. Now your hands reveal every thing. Mohammad Sahib said that at the time of 'Kiyama' your hands will speak. The time of Kiyama has come. Now get it. If some one reads some thing, hands will speak and reveal what is truth and what is untruth. What is good and what is bad. If someone says, "what is there in Mecca, stretch your hands towards Mecca and see for yourself". All the Sahaj Yogis could feel the chaitanya and differentiate between the truth and untruth. Such a beautiful arrangement has been made.

The whole subtle system is installed with in us. When you achieve this state of self realization then you automatically get rid of all the negativities. Your six enemies, anger, lust, attachment, ego, jealousy and greed (क्रोध, काम, मोह, मद, मत्सर, लोभ) runaway from you. When we conducted first public programme in England, six drug addicts came to the programme. We were astonished that they were relieved of their drug addiction the second day. It was really astonishing. They said, these drugs are useless, we

do not like the drugs now. They were fully transformed people. Today they are beautiful Sahaj Yogis working for the spreading of Sahaj Yoga. You have to achieve this thing. Know your spirit. Arrangements have been made in us to achieve this Divine Knowledge. Or we can say that this machine is installed with in us. When it becomes operative then you experience many miracles about yourself. All the drunkards, who came to Sahaj Yoga have said adieu to Alcohol. Wicked people have left their wickedness.

I went to Taliyati, there a Mafia Don accepted Sahaj Yoga. I asked how has he accepted Sahaj Yoga? They said, Shri Mataji, he wants to meet you." He came. He was so humble! He said, "Shri Mataji I have committed many crimes. Could I be forgiven?" I said, "You are forgiven". That is the thing of the past. Today I am talking to you in the present. Now in the present, what are you? You have to see how much you have been transformed. The way he has done was really astonishing. How could this Mafia Don get so much transformed? This happened. No lecture was given to him nor was he made to understand something. This is a happening and it was to happen in Kaliyuga, because in kaliyuga people will be transformed. After transformation one becomes so beautiful and pure.

Today this world needs this transformation very badly. To bring about

this transformation I think, is the duty of all the Sahaj Yogis. I did my best. Worked very hard, went to so many countries of the world. Now it is the duty of all the Sahaj Yogis to tell everyone about Sahaj Yoga and get them transformed. Many people have gone astray in the name of God Almighty and in the name of Dharma. When you give them Self Realisation, they will be enlightened. If the connection of all these lights burning here is severed with the mains then could they give light? In the case of human beings it is the same. We have to be connected to this great power, which has always been eternal truth. It existed in the past and exists today.

When your attention gets enlightened you become an enlightened person. Such a person works for the benevolence of the whole world. If the human beings are transformed, all the problems will be solved. Man is the root cause of all the problems. With his transformation all the problems, all the difficulties will go away. So we should try to give Realisation to more and more people. After awakening, I have seen, there is no quarrel, no turmoils, any country they may belong to, there is no quarrelling, no fight. They meet each other with open heart. It is the great ocean of joy. Sahaj Yogis enjoy being together. It is the tradition of our country that together we should live like brothers and help each other in every way. This is our culture.

Strange things happened. This country was divided in many parts. Still there are many disputes in the country. People are quarrelling everywhere. On one issue or the other people are ready to grapple with each other, and groups are formed for this purpose. It is inhuman. Even animals do not behave like that. Human beings should not be like that.

Human being is the best of Divine creations. God Almighty has made such a beautiful arrangement in us to get our awakening. We do not have to spend any thing for it. One gentlemen said to me, "I will pay you Rupees one Lakhs if you awaken my kundalini." I replied, "I am willing to pay you Rupees Two Lakh for keeping silent." **Kundalini knows no money. It is a divine power with in you. It could be awakened if you have the pure desire. It could not be forced upon you. It could be worked out only if you have the pure desire. No other desire is pure.** Had it been pure, the shape of the modern economy would have been altogether different. With great difficulty you construct a house. But you are not contented. You wish to have a motor. But this also cannot give you contentment. None of the material objects give us contentment. Had the desire for this object been pure then they would have satisfied you. Self realisation is the only pure desire. The spirit resides in your attention. The light of the spirit

will give you joy and peace. It will enlighten you in everyway and it will make you collective. You will become collectively conscious.

We think ourselves to be seperate entities. They are such and such, and we are such and such. In the eyes of God human beings are one, under His protection. It is just mental exercise that we are superior, they are inferior, this and that. It is purely mental exercise. One gentleman came to meet me. He was Chief of Ivory Coast. He was so humble that I was surprised. With great humility he said, "Shri Mataji, Please make all my countrymen Sahaj Yogis." I said alright, you could do it yourself. He told, I am in a state of joy. He had divorced three wives. Now he was ashamed of it. "What is my life? Why have I designed it like that? But now I am fully transformed. I am full of joy, peace and comfort." There are six hundred Sahaj Yogis there. They had taken up Muslim religion. I asked them why did you adopt Muslim religion? They replied that these French people have no morality at all. They are totaly immoral. So we thought to adopt Muslim religion so that some morality could be preserved. I said, all religions are equal in Sahaj Yoga. We do not insult any religion; no religion is higher or lower. After Sahaj Yoga you will thoroughly understand your religion and its depth. So far, you were lost. Now you can

achieve it. It's a fact that all those people for whom religions were made, are fighting in the name of religion. It is not proper. Wickedness has taken over the wisdom.

Kundalini enlightens the brain. When it passes through the Agnya Chakra, it enlightens the brain, and one could see one's mistake. One realises one's foolishness. What was I fighting about? Without knowing yourself, you can not know the truth. But people are wasting their lives, and lives of their children. The whole country will be destroyed. Many countries are being destroyed. So we have to awaken our Kundalini. It is very sacred. This Kundalini is your individual Mother. She is your own Mother. Irrespective of the number of children, you are the sons and daughters of Kundalini. She knows every thing about you. Everything is recorded on it. What is your desire, what were you, what are your defects and what is the problem in your body? She knows everything. Taking care of all the problems, your Mother Kundalini rises without giving even the slightest trouble to you. Because She is your Mother. When you were born, your Mother with-stood all the pain, you suffered no pains at all. Similarly Kundalini is your Mother, and while giving you your rebirth it gives you no pain. You are lifted so high that you are surprised to know that you are like that. All this wealth was innate in you,

and you did not know about it! She is with you in every way. These chakras work on physical, mental, intellectual and spiritual levels and it is worked out in every way. There is absolutely no doubt that after coming to Sahaj Yoga, your health is improved, every thing is improved. Not only that; by the grace of goddess Lakshmi your monetary condition also improves.

Those people who have become Sahaj Yogis in our country, they have become prosperous. Their behaviour has improved and all disputes finished. Because this power is all pervading, moves every where. It works out everything, and our lives become ideal, so ideal that people say, "what a man he is!" As it was said for the saints.

Today, so many Sahaj Yogis are sitting because Sahaj Yoga spread in most of the countries. Everywhere there was a sort of disgust and disappointment. Violence was at its height. Many people could not with-stand it and they came to Sahaj Yoga. They say that Sahaj Yoga has spread in 86 countries. No doubt I didn't go to all these countries. But wherever the seed goes it could sprout and become a plant. Similarly Sahaj Yoga spread every where. Its very surprising to see that people of these countries would come here. They go to Italy for Pujas. So far I have not been able to go to their countries. May be that

I go someday. I am surprised to see their love and harmony with each other. There was a boy in Bombay who used to say, "Mother, I do not want to live, my Mother is very bad". That boy died in the bomb blast. This news spread to all the countries and everyone was concerned about it. It was told to people that he was a saint. The authorities offered land to cremate or bury the dead body. Such letters were sent to me that I was astonished.

Recently my brother Baba Mama expired. He loved people so much that they sent so many letters and faxes, which I have not been able to go through so far. So much of love, so much of beautiful things people wrote that I am surprised, I never thought that people loved him so much. The atmosphere of love you have entered. Every one will love you and you will also love everyone. The biggest quality of Sahaj Yoga is the Power of Love. No other power could stand before it. You are in the protection of this Power of Love. You are always protected. No one can touch you because God loves you. Who dares to go against Him? Who could be hostile to Him? We have many examples where people say, "how have I changed, I do not know. How have I achieved, I do not know". You feel happy when you listen

to such things because they are all your brothers. They belong to you. It appears that the whole world will be transformed. Nice days will come. All this is happening, yet many people are still to be transformed. Transformation is very important. Human beings have fallen to a very low level. It is very easy to transform them. You have to do it. There is no other way out. But transformation of the people and kundalini awakening is the only way to achieve this goal. You need not stand in the water or sit before the fire. **Just get connected. You have to give a little of your time. Go to meditation centres and attain more depth. People do not grow because they do not go to collectivity. Without nourishing it with collective love this plant will not grow.** That is the reason Jesus Christ said, that some seeds fell on stone or in such places that they were destroyed but those seeds which fell in the fertile land, sprouted and became trees. Sahaj Yoga neither condemns nor opposes any religion. Incorporation of the quintessence of all the religion in it, is its speciality. The deep relations which are there in these religions will get established. A life full of joy and comforts is waiting for you. May you achieve it.

This is my blessing to you all.